जनता सड़क पर

तन-लोहा मन गलता है
सड़कों पर मजदूर पलता है।
मीलों का सफर हैं नंगे पाँव,
लौट चलें आ अपने गाँव
बहुत हो गया धूप-छांव
लौट चलें आ अपने गाँव!

छोड़ अरे यह तेरा-तेरी
शहरों की यह हेरा-फेरी
सड़क किनारे मेरी रेहड़ी
घुल गया जीवन रगड़ा-रगड़ी
उछल गई मजदूर की पगड़ी
शहर छूट गया, डगमगाते पॉव
लौट चलें आ अपने गाँव!

जीवन भर की नेक कमाई
पटरी-सड़कों पर आज गवाई
घर-आंगन की अंतिम दौड़
मीलों का सफर, नहीं कोई ठौर
जीवन भर की मजदूरी संग
कदम मिलाते दोनों पॉव
बहुत हो गया धूप-छाँव
लौट चलें आ अपने गाँव!

डॉ.चंद्रकांत तिवारी